SJIF Impact Factor - 5.54

E- ISSN 2582-5429

AKSHARA

Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
January 2022 Special Issue 04 Volume III

विश्व हिंदी भाषा के उन्नयन में महाराष्ट्र का योगदान

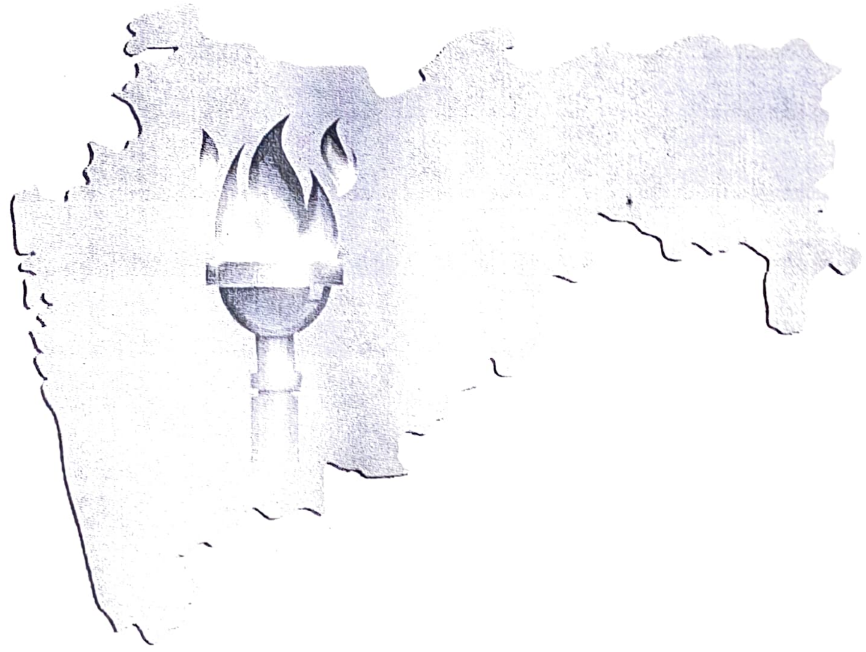

✲ कार्यकारी संपादक ✲
डॉ. कांबळे आशा दत्तात्रय
हिंदी विभाग प्रमुख
कै.शं.दे.पाटील उर्फ बाबुराव दादा कला, वाणिज्य तथा
कै. भाऊसाहेब म.दि.सिसोदे विज्ञान महाविद्यालय, शिंदखेडा

✲ अतिथि संपादक ✲
डॉ. तुषार पाटील
(प्र. प्राचार्य)
कै.शं.दे.पाटील उर्फ बाबुराव दादा कला, वाणिज्य तथा
कै. भाऊसाहेब म.दि.सिसोदे विज्ञान महाविद्यालय, शिंदखेडा

✲ सह-संपादक ✲
डॉ. दिपक विश्वासराव पाटील

✲ सह-संपादक ✲
डॉ. राहूल सुरेश भदाणे

कै.शं.दे.पाटील उर्फ बाबुराव दादा कला, वाणिज्य तथा
कै. भाऊसाहेब म.दि.सिसोदे विज्ञान महाविद्यालय, शिंदखेडा

Chief Editor : **Dr. Girish S. Koli**, AMRJ
For Details Visit To - www.aimrj.com

Akshara Publication

E- ISSN 2582-5429

Akshara Multidisciplinary Research Journal

AMRJ

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

January 2022 Special Issue 04 Volume III

SJIF Impact- 5.54

Index

Sr No	Title of the Paper	Author's Name	Pg.No
1	हिंदी के उन्नयन में महाराष्ट्र का योगदान	प्रो. गजानन चव्हाण	06
2	राष्ट्रभाषा प्रचार समिति	डॉ. हेमचन्द्र वैद्य	14
3	हिंदी भाषा के विकास में महाराष्ट्र का संस्थात्मक योगदान	प्रो.रणजीत जाधव	18
4	हिंदी के प्रचार–प्रसार में डॉ. अंबादास देशमुख जी का योगदान	डॉ. आशा दत्तात्रय कांबले	24
5	हिंदी भाषा के उन्नयन में महाराष्ट्र के संतों, क्रांतिकारियों ,समाज सुधारकों,कलाकारों एवं साहित्यकारों का योगदान	प्रा. डॉ. गौतम कुवर	27
6	हिंदी भाषा के उन्नयन में खान्देश का योगदान (डॉ. मधुकर खराटे एवं डॉ. शिवाजी देवरे के विशेष संदर्भ में)	डॉ. अश्फ़ाक़ इब्राहिम सिकलगर	30
7	मालती जोशी का हिंदी साहित्य में योगदान	डॉ. सुनीता नारायणराव कावळे	34
8	हिंदी भाषा के विकास में अहिंदीभाषी कवियों का योगदान	डॉ. आर. के. जाधव	37
9	विश्वभाषा हिंदी के उन्नयन में महाराष्ट्र का योगदान	डॉ.सूर्यकांत शिंदे	41
10	हिंदी भाषा के विकास में श्री. शि. वि. प्र. संस्था का साहित्य एवं वाणिज्य महाविद्यालय, धुले का योगदान	प्रा. डॉ. अभयकुमार रमेश खैरनार	44
11	हिन्दी भाषा के उन्नयन में महाराष्ट्र का योगदान	प्रा. डॉ. वनिता त्र्यंबक पवार - निकम	49
12	विश्वभाषा हिंदी के उन्नयन में राजभाषा समितियों का योगदान	प्रा. डॉ. सुषमा कोंडे	52
13	हिंदी भाषा के उन्नयन में कवि दामोदर मोरे का योगदान	डॉ. संजय रणखांबे	55
14	कवि मनोज सोनकर का हिंदी साहित्य में योगदान	डॉ. मनोहर हिलाल पाटील	60
15	हिंदी भाषा के उन्नयन में महाराष्ट्र के बाबूराव विष्णु पराडकर की पत्रकारिता का योगदान	डॉ. संतोष रायबोले	64
16	मराठी संतों का साहित्य और भक्ति आंदोलन	प्रा. रामहरि काकडे	67
17	डॉ. सतीश यादवजी का रचनाकार्य	प्रा. नयन भादुले–राजमाने	71
18	हिंदी भाषा के उन्नयन में महाराष्ट्र के साहित्यकार संत विनोबा भावे का योगदान	प्रा. डॉ. राजेंद्र काशिनाथ बाविस्कर	75
19	हिन्दी भाषा के उन्नयन में संत नामदेव का योगदान	डॉ. भारती वळवी (वाघ)	79
20	हिंदी भाषा के उन्नयन में महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी का योगदान	प्रो. कॅप्टन शिंदे अनिता मधुकर	82
21	व्यक्ति एवं रचनाधर्मिता : डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे	डॉ.बालाजी गायकवाड	84
22	संत नामदेव का हिंदी काव्य में योगदान	डॉ. निंबा लोटन वाल्हे	88
23	हिंदी भाषा के विकास में डॉ. अभयकुमार का योगदान	डॉ. विनोद विश्वासराव पाटील	90
24	हिंदी भाषा के उन्नयन में महाराष्ट्र के विविध संस्थाओं का योगदान	डॉ. मारोती यमुलवाड	94

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
AMRJ
January 2022 Special Issue 04 Volume III
SJIF Impact- 5.54

16 मराठी संतों का साहित्य और भक्ति आंदोलन

प्रा. रामहरि काकडे
सहायक प्राध्यापक (हिंदी विभाग)
महिला महाविद्यालय, गेवराई जिला - बीड (431143)
भ्रमणध्वनी : 09850441267 अनुप्रेषित : ramkakde7@gmail.com

सार (Abstract) अखिल भारतीय भक्ति आंदोलन की मूल भूमिका है ईश्वर को आम जन तक पहुंचाना। ईश्वर और सामान्य जन में निर्माण की गई बाधाओं को हटाकर ईश्वर को जनसामान्य तक पहुंचाने का कार्य अखिल भारतीय भक्ति आंदोलन ने किया है। भले ही यह आंदोलन भारत के विभिन्न भागों में अलग-अलग समय में चला है किंतु इसकी मूल धारा एक ही थी। इस दृष्टि से महाराष्ट्र में निर्माण हुआ भक्ति साहित्य महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है। मराठी के संत नामदेव अखिल भारतीय भक्ति आंदोलन के प्रारंभिक समय के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर है। उन्होंने अपने पदों से विषय एवं शैली अखिल भारतीय भक्ति आंदोलन को दी है। संत नामदेव के अतिरिक्त महानुभाव पंथ के प्रवर्तक चक्रधर स्वामी, संत दामोदर पंडित, संत ज्ञानदेव, मुक्ताबाई, संत नामदेव,·संत एकनाथ, संत तुकाराम आदि ने हिंदी में पदों की रचना कर हिंदी भक्ति आंदोलन को व्यापक करने का कार्य किया है।

बीज शब्द (Keyword) अखिल भारतीय भक्ति आंदोलन में मराठी भक्ति साहित्य की भूमिका। मराठी संत कवियों की अखिल भारतीय भक्ति आंदोलन को देन। गुरु महिमा, नामस्मरण, हिंदू-मुस्लिम विषयक दृष्टिकोण, जाति - पाती विरोध इस मराठी पर संतों के विचार।

भूमिका: संत समाज का हित चाहते हैं। वे अपनी वाणी एवं कार्यों से समाज हित की बात करते हैं। आखील भारतीय भक्ति आंदोलन एक ऐसा विशाल आंदोलन था जो मानवता की आधारशिला पर खड़ा था। इस आंदोलन ने प्रदेश की सीमाएं, भाषा, धर्म, जाति-पाती आदि की सभी सीमाओं को पार कर अखिल भारतीय स्वरूप धारण किया। इस विशालकाय आंदोलन में मराठी संतों ने भी अपना योगदान दिया। महाराष्ट्र संतों की भूमि रही है।

भक्ति आंदोलन के उद्भव के संदर्भ में विद्वानों में अलग-अलग मत है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के लिए वह बाहरी आक्रमण की प्रतिक्रिया है तो हजारी प्रसाद द्विवेदी उसे महज भारतीय परंपरा का अपना स्वत: स्फूर्त विकास मानते हैं। भक्ति आंदोलन के पूर्व धर्म अपनी सार्थकता खो गया था। वह अपनी जड़वादिता के कारण सामान्य मनुष्य के शोषण का शस्त्र बन गया था। धर्म के नाम पर समाज में विषमता फैलाकर अमानवीय व्यवहार हो रहा था। इस पृष्ठभूमि में ईसा की सातवीं शती में दक्षिण में अलवर भक्तों का आविर्भाव हो गया। आचार्य शुक्ल ने इनकी संख्या 12 बताई है। इन भक्तों ने पहली बार धर्म के जड़त्व को नष्ट करने का प्रयास किया। रूढ़िवादिता को नकार कर लोकभाषा में अपने आराध्य की आराधना की। इन आलवारों में शूद्रों के साथ 'अंडाल' नामक स्त्री भी थी। रामानुजाचार्य ने इन भक्त कवियों के पदों का संकलन 'दिव्य प्रबंधम' नाम से किया और शास्त्रीय पद्धति से सगुण ब्रह्म का निरूपण किया। इसलिए इन्हें ही भक्ति, दर्शन और भावना का प्रवर्तक माना जाता है। भक्ति की यह लहर धीरे-धीरे देशव्यापी होती गई। लगभग इसी समय पूर्व में बंगाल के अंदर संस्कृत के प्रसिद्ध गीतकार जयदेव ने गीत गोविंद की रचना कर कृष्ण प्रेम से पूर्ण मधुर स्वर से भारतीय वातावरण को भर दिया। बिहार में मैथिल कोकिल विद्यापति का प्रादुर्भाव हुआ। गुजरात में नरसी मेहता, बंगाल में चैतन्य महाप्रभु, असम में शंकर देव और महाराष्ट्र में नामदेव, ज्ञानदेव, मुक्ताबाई भक्ति भावना का प्रसार कर रहे थे।

मराठी और हिंदी दोनों भाषाएं आर्य भाषा परिवार से है। मराठी संतो को हिंदी के प्रति सहज ममता रही है। आचार्य विनय मोहन शर्मा अपनी पुस्तक हिंदी को मराठी संतों की देन में लिखते हैं, 'मराठी साहित्य में संत शब्द व्यापक अर्थ में व्यवहार होता है वहा विष्णु के अवतार राम के उपासक तुलसीदास संत है और ब्रह्म के प्रतीक राम का नाम स्मरण करने वाले निर्गुणी कबीर भी संत है वह भक्त और संत के बीच कोई भेद नहीं माना गया।' मराठी साहित्य में भक्ति की एक सुदीर्घ

परम्परा रही है। नाथ संप्रदाय, महानुभाव संप्रदाय, वारकरी संप्रदाय, दत्त संप्रदाय एवं समर्थ संप्रदाय के माध्यम से भक्ति भावना समूचे मराठी साहित्य में व्याप्त हो गई है। आगे चलकर नाथ संप्रदाय प्रकारांतर से वारकरी संप्रदाय में विलीन हो गया। गुलाबराव हाडे अपनी पुस्तक 'मराठी संतों की दक्खिनी काव्य की सामाजिक फलश्रुती: बहुलतावादी पाठ' इस पुस्तक में लिखते हैं कि 'हिंदी प्रदेश की संत काव्य परंपरा असल में मराठी संत काव्य परंपरा की ही एक विकसित शाखा का रूप है। लेकिन मूलतः महानुभव पंथ के संस्थापक स्वामी चक्रधर और वारकरी संप्रदाय (नाथ संप्रदाय) के संत ज्ञानेश्वर और नामदेव ने विभिन्न स्रोतों से प्राप्त विचार, भाव एवं शैली को नवीनतम रूप देकर दक्खन की मराठी ही नहीं, बल्कि उत्तर भारत की हिंदी संत काव्य परंपरा का मार्ग भी प्रशस्त किया। साथ ही यह बात सदैव स्मरण रखनी चाहिए कि, सिद्धों और नाथों की जो सैद्धांतिक विशेषताएं हिंदी संत - काव्य में पाई जाती है, वे मराठी संतों के माध्यम से ही उसमें सन्निहित है। इतना ही नहीं हिंदी संत काव्य परंपरा के प्रथम उद्गाता संत कबीर के अविर्भाव से बहुत पहले स्वामी चक्रधर, ज्ञानेश्वर, नामदेव, गोंदा, मुक्ताबाई आदि ने दक्खिनी में ऐसे - ऐसे पदों की रचना की थी, जिनमें शैली की दृष्टि से कबीर की पद - रचना से गहरा संबंध है। मराठी भक्ति आंदोलन के संदर्भ में तुकाराम ने निम्न पद रचना कि हैं, **संतकृपा झाली। इमारत फळा आली ।। /ज्ञानदेवे रचिला पाया। उभारिले देवालया।। / नामा तयाचा किंकर। तेणें केला विस्तार।। / जनार्दन एकनाथा खांब दिला भागवत।। तुका झालासे कळस। भजन करा सावकाश।।**

अर्थात संतों की कृपा हुई- यह इमारत पूरी हुई। ज्ञानदेव नींव रखी - मंदिर की रचना की। उनके भक्त सेवक नामदेव ने भवन का विस्तार किया। संत जनार्दन एकनाथ ने तथा भागवत - धर्म ने इस मंदिर के खंभे बनाए और इस भक्ति - मंदिर का शिखर बने श्री संत तुकाराम। इस प्रकार इस रुपक में मराठी भक्ति के संबंध जानकारी है।

संत नामदेव ने मराठी के साथ- साथ हिंदी में भी पद रचना की। उनके पदों का संकलन सिखों का पवित्र ग्रंथ 'गुरु ग्रंथ साहिब' में किया गया है। इतना ही नहीं तो उन्होंने महात्मा कबीर से पूर्व इस आंदोलन को विषय एवं शैली प्रदान की। इस संदर्भ में संत नामदेव महत्वपूर्ण है। संत नामदेव का जन्म 26 अक्टूबर 1270 ई.स. को उस्मानाबाद जिले के नरसी बामणी मराठवाड़ा के गांव में हुआ। उनके पिता का नाम दामा सेठ और माता का नाम कनोई था। उनका विवाह नौ वर्ष की आयु में ही हुआ। उनके पिता दामा सेठ परम विठ्ठल भक्त थे और प्रतिबर्ष विठ्ठल की वारी अर्थात यात्रा करते थे। घर में भक्ति भावना के कारण नामदेव के मन में बचपन से ही विठ्ठल के प्रति भक्ति भावना निर्माण हुई और वे पंढरपुर में जाकर विठ्ठल रुक्मिणी की सेवा में लीन हो गए। वहीं पर उनकी भेंट ज्ञानेश्वर एवं उनके भाई बहनों से हुई। उन्हीं की प्रेरणा से नामदेव ने विसोबा खेचर से गुरु दीक्षा ग्रहण की। उसके पश्चात वे ज्ञानेश्वर के साथ उत्तरी भारत की यात्रा पर चले गए। उत्तरी भारत की यात्रा से महाराष्ट्र में लौटने के बाद उनके सखा ज्ञानेश्वर ने आलंदी के पास समाधि ले ली। ज्ञानेश्वर के विरह से व्याकुल नामदेव पुनः उत्तर में पंजाब की ओर चले गए। पंजाब में घुमान नामक स्थल को उन्होंने अपनी कर्मभूमि बनाया। जहां पर आज भी नामदेव संप्रदाय लोगों की बस्ती है। वहां पर उनका एक मंदिर भी है। सन 2015 का अखील भारतीय मराठी साहित्य सम्मेलन इसी कारण पंजाब के घुमान में आयोजित किया गया था। सिख धर्म के सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ 'गुरुग्रंथ साहिब' में उनके कुल 61 पद संकलित किए गए हैं। इनके पदों में जात- पाँत, कर्मकांड एवं पाखंड का विरोध कर गुरु की आवश्यकता, ईश्वर का एकत्व, नामस्मरण का महत्व प्रतिपादित किया है। संत एकनाथ ने भी अनेक हिंदी पदों की रचना की है। वे भी ऊत्तरी भारत की यात्रा कर चुके थे। अतः ऊन्होने ने भी गौलण, मुंडा, भारूड प्रकार में हिंदी में सृजन किया। संत तुकाराम ने भी संत कबीर के समान कुप्रथाओं पर प्रहार किया है।

मराठी संतों में सगुन उपासक और निर्गुण उपासक ऐसा स्पष्ट भेद नहीं है। वे सच्ची अनुभूति भक्ति द्वारा ही मानते थे। मराठी संतो ने दार्शनिक जटिलता की अपेक्षा सरल और सामान्य मार्ग का अनुसरण किया है। उनका विठ्ठल कबीर के राम के समान चराचर में व्याप्त है । उनके पदों में ईश्वर के प्रति एकत्व का वर्णन किया गया है- **जहाँ तु गिरीवर तहां हम मोरा /जहाँ तुम चंदा तहा मैं चकोरा /जहाँ तुम तरुवर तहा मैं पंछी /जहाँ तुम सरवर तहाँ मै मच्छी /जहाँ तुम दीवा तहाँ मै बत्ती /जहाँ तुम पंथी तहाँ मै साथी।**

E- ISSN 2582-5429

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

AMRJ

January 2022 Special Issue 04 Volume III SJIF Impact- 5.54

यह संत मानते है कि यह संसार रूपी भवसागर पार करने के लिए गुरु की आवश्यकता है। गुरु के उपदेश के अनुसार चलकर ही इस संसार से मुक्ति मिल सकती है। भक्ति के क्षेत्र में सद्गुरु का महत्व अनन्यसाधारण है। अगर अपने आराध्य विट्ठल को प्राप्त करना है तो उसका मार्ग सद्गुरु के माध्यम से ही जाता है। इसलिए सभी संतों ने गुरु की आवश्यकता का प्रतिपादन किया है- **जउ गुरुदेऊ न मिलै मुरारी। / जउ गुरुदेऊ न उतरे पारि।। / जउ गुरुदेऊ न वायु टिडावे। / जउ गुरुदेऊ न यह दिस धावै। / जउ गुरुदेऊ त संसा टूटै। / जउ गुरुदेऊ त जमते छुटै।।**

यह संत अपने आराध्य के प्रेम में व्याकुल है। अपने आराध्य के मिलन की तीव्रता उनमें इतनी है कि जिस प्रकार पुरुष विषय वासना से युक्त होकर पर नारी से प्रेम कर तड़पता है उसी प्रकार नामदेव भी अपने आराध्य के लिए तड़प रहे हैं- **कामी पुरख कामनी पिआरी। / ऐसी नामें प्रीति मुरारी।**

संत नामदेव भी कबीर के समान स्वयं को आराध्य की पत्नी मानकर अपनी प्रिय की राह देख रही है।

मै बउरी मेरा राम भरतार

रचि रचि ताकउ करउ सिंगार।

संत नामदेव अपने आराध्य के प्राप्ति के लिए इतने व्याकुल हुये है कि उन्होंने लोक लाज का त्याग किया है। वे कहते हैं कि अब ऐसा समय आया है कि आराध्य की विरह के कारण मेरी जान चली जा सकती है,- **भले निंदउ भले निंदउ भले निंदउ लोगु,/तनु मनु राम मिआरे जोगु।/ बादु बिबादु काहू सिउ न कीजै; रसना रामु रसा इनु पीजै। / अब जीउ जाति ऐसी बनि आई, मिलऊ गुपाल नीसानु बजाई।**

नामदेव की दृष्टि में विष्णु नाम की महिमा ब्रह्मदेव को भी समझ में नहीं आया। यह नाम की महिमा शंकर ने समझने के कारण उन्होंने पत्नी उमा को नाम रहस्य बताया। जहां नामस्मरण रहता है वहां द्वैतवाद भेदभाव नहीं रहता। वह अपने आराध्य के साथ एकरूपता प्राप्त करता है।

हरि हरि करत मीटे सभि भरमा।

बरिके (हरिके) नाम ले, उतम धरमा।

प्रणकै नामा ऐसो हरि।

जासु जपत भै अपदा टरी।।

यह संत देह की नश्वरता का प्रतिपादन कर कहते है कि, संसार माया जाल है और मन को इस माया जाल रूपी पिंजरे में नहीं पड़ना चाहिए। मनुष्य के शरीर और सौंदर्य पर कभी भी गर्व नहीं करना चाहिए क्योंकि एक दिन सभी को मरना ही है- **मन पंछी या मत पड पिंजरो। / संसार माया जाल रे।। / तन जोबन रुप कारण। / न कर गर्व गवार रे।।** अतः मनुष्य को अपने आराध्य का सेवक बन कर आराधना करनी चाहिए। सामाजिक आरोग्य के लिए वे कहते है कि, व्यक्ति को सदा संत संगती में रहना चाहिए। संत संगती से कठीण संकट भी टल जाते है।

संत नामदेव संत ज्ञानेश्वर के साथ उत्तरी भारत की यात्रा पर गए थे। उत्तरी भारत की यात्रा से लौटने के बाद जब संत ज्ञानेश्वर ने समाधि ली तब उनके विरह से व्याकुल होकर संत नामदेव पुनः पंजाब की ओर चले गए। तब उत्तर भारत में मुसलमानों का राज था। उत्तरी भारत में हिंदू और मुस्लिम संघर्ष चल रहा था। मुसलमान के शासन में उन्हें जो विसंगतियां दृष्टिगत हुई उन विसंगतियों पर उन्होंने प्रहार किया है। उन्होंने केवल मुसलमानों पर ही प्रहार नहीं किया तो बल्कि हिंदुओं को भी नहीं बख्शा। संत कबीर के समान वे हिंदू और मुसलमानों की विसंगतियों पर प्रहार करते दिखाई देते हैं,

हिंदू अंधा तुरकू काना दोहा ते गिआनी सिआणा।

हिंदू पूजै देहुरा मुसलमाणु मसीता।।

नामें सोई सेविआ जह देहुरा न मसीता।।

इस प्रकार उन्होंने हिंदू और मुस्लिम दोनों धर्मो के धर्मांधों को फटकार लगाई है। वह धार्मिक कट्टरता को कम कर मानवता को महत्व देना चाहते थे।

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
AMRJ
January 2022 Special Issue 04 Volume III SJIF Impact- 5.54

संत कौन सी भी धर्म का क्यों ना हो उसका एक ही धर्म रहा है मानवतावाद। भक्ति आंदोलन का उदय ही सामान्य जन के लिए हुआ है समाज के उच्च वर्णीयों ने धर्म एवं धर्म ग्रंथों के सहारे ईश्वर को अपने तक सीमित रखा। ईश्वर को इन उच्च वर्णीयों से मुक्त कर आमजन को ईश्वर तक या ईश्वर को आमजन तक पहुंचाने के लिए संतों ने कार्य किया। फिर वह जन भाषा में ग्रंथों का सृजन हो या फिर सीधे धार्मिक और सामाजिक आडम्बरों का खंडन हो। जो भी करना पड़े संतों ने अपने-अपने पद्धति से कर समाज के आमजन का जीवन सुलभ करने का कार्य किया। इसमें धार्मिक एवं सामाजिक आडम्बरों को उध्वस्त करना आवश्यक था। संत नामदेव तो उत्तरी भारत की यात्रा कर चुके थे। उन्होंने यात्रा के समय जो देखा उसमें भारत में सामाजिक एवं धार्मिक संघर्ष महत्वपूर्ण था। जिस प्रकार हिंदू मुस्लिम संघर्ष चल रहा था उसी प्रकार हिंदुओं के अंदर भी ऊंच-नीच की भावना बलवती हो गई थी। समाज के उच्च वर्ण के लोग निम्न जाति के लोगों को मानव मानने को तैयार नहीं थे। ऐसे समय में संत नामदेव ने जाती - पाती पर प्रहार करना प्रारंभ किया। सभी संतों का कहना था कि ईश्वर को सभी प्राप्त कर सकते हैं उसके लिए उच्च जात की आवश्यकता नहीं तो शुद्ध भाव की आवश्यकता है। इस संदर्भ में नामदेव कहते हैं,

कहा करुँ जाती काहाँ करू पाती
राजा राम सेऊँ दिन राती।
मन मेरो गंगा मन मेरो कासी
राम रम काटूँ जम की फांसी।।

निष्कर्ष - अखिल भारतीय भक्ति आंदोलन के संदर्भ में मराठी संतों की महत्वपूर्ण देन है। हिंदी साहित्य में भक्ति साहित्य की जो धारा प्रवाहित हुई उससे भी पहले महाराष्ट्र में भक्ति साहित्य लिखना प्रारंभ हुआ था। ऐसे बहुत से सारे तत्व है जो हिंदी साहित्य में मराठी साहित्य से आए हुए हैं। संत नामदेव कबीर से पहले हुए। कबीर में नामदेव की विषय एवं शैली दृष्टिगत होती है। संत नामदेव ने संत ज्ञानेश्वर के साथ एवं उनके समाधि लेने के पश्चात भी उत्तरी भारत की यात्रा कर हिंदी पदों का निर्माण किया। जिसका अंतर्भाव सिक्खों का पवित्र ग्रंथ 'गुरु ग्रंथ साहिब' में किया गया है। मराठी संतों ने अपने पदों में ईश्वर का एकत्व, गुरु की आवश्यकता, नामस्मरण, प्रेम की तीव्रता, देह की नश्वरता, हिंदू - मुस्लिम दृष्टिकोण, जाति - पाति विरोध, नाथ-पंथी शब्दावली का प्रयोग आदि मराठी संत काव्य की विशेषताएं रही है जो हिंदी संत कवि की रचनाओं में भी दृष्टिगत हैती है।

संदर्भ सूची:

1) हिंदी को मराठी संतों की देन - आचार्य विनय मोहन शर्मा
2) मराठी संतों की दक्खिनी काव्य की सामाजिक फलश्रुती: बहुलतावादी पाठ - गुलाबराव हाडे
3) मराठी संत काव्य - प्रा. वेद कुमार विद्यालंकार
4) भक्तिकालीन काव्य में मानवीय मूल्य - डॉ. हणमंतराव पाटील
5) हिंदी साहित्य की भूमिका - हजारी प्रसाद द्विवेदी
6) भक्ति काव्य यात्रा - रामस्वरूप चतुर्वेदी

□ □ □